

॥श्रीः॥

वातपुरनाथाष्टकम्

कुन्दसुमबृन्दसममन्दहसितास्यं  
नन्दकुलनन्द भर तुन्दलनकन्दम् ।  
पूतनिजगीत लव धूत दुरितं तं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ १ ॥

नीलतर जाल धर भालहरि रम्यं  
लोलतर शीलयुत बालजनलीलम् ।  
जालनति शीलमपि पालयितुकामं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ २ ॥

कंसरणहिंसमिह संसरणजात-  
क्लान्ति भर शान्तिकर कान्तिझर वीतम् ।  
वातमुख धातुजनि पात भयघातं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ३ ॥

जातु धुरि पातुकमिहातुरजनद्राक्  
शोकभरमूकमपि तोकमिव पान्तम् ।  
भृङ्गरुचि सङ्गरकृदङ्ग लतिकं तं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ४ ॥

पाप भव ताप भर कोपशमनार्था-  
श्वासकर भास मृदु हासरुचिरास्यम् ।  
रोग चय भोग भय वेगहरमेकं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ५ ॥

घोषकुलदोषहर वेषमुपयान्तं  
पूषशत दूषक विभूषण गणाढ्यम् ।  
भुक्तिमपि मुक्ति मति भक्तिषु ददानं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ६ ॥

पापक दुराप मति तापहर शोभ-  
स्वापघन मामतदुमापतिसमेतम् ।  
दूनतर दीन सुख दानकृतदीक्षं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ७ ॥

पाद पत दादरण मोद परिपूर्णं  
जीव मुख देवजन सेवनफलाङ्घ्रिम् ।  
रूक्ष भव मोक्षकृत दीक्षनिज वीक्षं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ८ ॥

भृत्यगणपत्युदित नृत्युचित मोदं  
स्पष्टमिदमष्टकमदुष्टकरणार्हम् ।  
आदधतमादरदमादिलयशून्यं  
वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ९ ॥

श्री पैङ्गानाडु गणपतिशास्त्रिविरचितं श्रीवातपुरनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ॥